Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Peer Reviewed, Refereed)

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

राष्ट्रीय कवि 'दिनकर' की चेतना

डॉ. आर. के. मेहरा

प्रस्तावना

राश्ट्रीय कवि 'दिनकर' (1908–1974) भारत के अतीत की गौरव गाथा गाते हुए मुग्ध हो जाते हैं, तो राश्ट्रीय असहयोग आन्दोलन, महात्मा गांधी की विचारधारा से प्रभावित, समाज में बढ़ती हुई विशमताओं, उत्पीड़न और अनाचार को देखकर उनका ह्रदय हाहाकार मचाता है। 'दिनकर' जी का राष्ट्र–प्रेम उनकी प्रथम कृति 'रेणुका' से ही प्रकट होने लगता है। इनकी 'तांडव', 'कस्मै देवाय', 'हिमालय', 'मिथिला', 'पाटलिपुत्र की गंगा' तथा 'बागी' कविताएं राश्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत हैं, वहीं 'हुंकार' और 'सामिधेनी' कृतियों में यही प्रवृत्ति बढ़ती हुई मिलती है। इन रचनाओं में क्रान्ति का उद्धोश है, ह्रदय की ज्वाला है, दास्ता की पीड़ा और उसके विरुद्ध विद्रोह की भावना है। कवि की इस राष्ट्रीय भावना में एक और तो द्विवेदीकालीन अतीत प्रेम है और दूसरी और छायावादी वेदना विवृति। साथ ही साथ प्रगतिवादि क्रान्ति–प्रेम, ध्वंस, युद्ध और परिवर्तनों की चाह भी मिलती है। इसके अतिरिक्त उसमें कोरा अतीत–मोह, अति शय औपदेषिकता, कोरी नारेबाजी और विदेशी भावों का भारतीयकरण मात्र आदि वे कमियां नहीं हैं जो प्रायः इस युग के अन्य राष्ट्रीय काव्यों में आ गई हैं। सच तो यह है कि 'दिनकर' से पहले भी श्री बालकृष्ण भार्मा 'नवीन' ने उथल–पुथल मचाने की तरन छेड़ी थी लेकिन उनका आवेश दर्द की तरह उठा और आंसुओं की तरह गिरकर रह गया। 'भारत–भारती' में भी प्रथम राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने भारत के नौजवानों को देश की परतन्त्रता दूर करने की उपदेश दिया है, लेकिन अनुभूति की जो तीव्रता और भावों की गतिशीलता क्रान्ति की पुकार में होती है, वह कोरे उपदेशों में नहीं होती। 'दिनकर' जी राष्ट्रीयता वास्तव में भाववादी राष्ट्रीयता है जिसमें चिंतन की संगति की अपेक्षा आवेग और आक्रोश है। परतन्त्रता के कारण अंग्रेजों के शोषण और अत्याचारों की प्रतिक्रिया का शक्तिशाली रूप 'दिनकर' के काव्य में दृष्टिपात होता है। 'दिनकर' जी ने हिंसा की प्रशस्ति के साथ–साथ महात्मा गांधी की विचारधारा से प्रभावित होने के कारण अहिंसा और विश्व–प्रेम का वर्णन भी अपने काव्य में किया है। जो उनकी राष्ट्रीयता, अंतरराष्ट्रीयता अर्थात मानवतावाद में परिणत होने का प्रयास करती है। 'दिनकर' उस पुनरूत्थानवादी काव्यधारा के कवि है जो भारतेन्दु से प्रारम्भ होकर छायावादी काव्य में व्यक्त हुई है। जिस प्रकार जयशंकर प्रसाद जी ने चन्द्रगुप्त के माध्यम से प्राचीन पात्रों में कर्म और भाक्ति का सौंदर्य दिखाया है, उसी प्रकार 'दिनकर' ने भीष्म और परशुराम के माध्यम से कर्म और क्रान्ति का प्ररेक वर्णन किया है। भाक्ति और क्रान्ति का जो वेग खुलकर 'दिनकर के काव्य में व्यक्त हुआ है, वह अन्यत्र नहीं। निसंदेह 'दिनकर' का काव्य राष्ट्रीयता, अंतरराष्ट्रीयता, मानवता, भावनाशीलता और वैचारिकता का अद्भूत समन्वय है।

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, अम्बाला छावनी।

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

विख्यात कवि, साहित्यकार, दार्शनिक और साहित्य के क्षेत्र में 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार विजेता 1952 से 1964 तक राज्यसभा के सदस्य रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने हिन्दी साहित्य के माध्यम से भारतीय राष्ट्रीय चेतना में नई जान फूँकी। 'दिनकर' जी पर विशेष रूप से रामनरेष त्रिपाठी कृत 'पथिक' और मैथिलीशरण गुप्त कृत 'भारत–भारती' कृतियों का प्रभाव था। उन्हीं से प्रेरित होकर उन्होंने कई सर्ग लिखे। 'दिनकर' जी का पहला काव्य 1929 में 'प्रणभंग' प्रकाशित हुआ 'दिनकर' जी ने उस समय मैट्रिक की परीक्षा दे चुके थे। 1935 में 'रेणुका' प्रकाशित हुआ और 1938 में 'हुंकार' तीसरा काव्य प्रकाशित हुआ। 'हुंकार' में कवि ने देश की स्वतन्त्रता के लिए आक्रोष प्रकट किया है। स्वतन्त्रता की प्रसव–पीड़ा अक्रांत भारत–जननी के सपूतों की सारी हल–चल, सारी विध्वंसकता एवं मर–मिटने के लिए 'दिनकर' जी ने अपने काव्य के माध्यम से भारतीय नवयुवकों का बड़ी निर्भिकता से नेतृत्व किया।

'दिनकर' जी भारतीय स्वतन्त्रता के प्रबल समर्थक और पोषक कवि है। बिहार और बंगाल के युवकों द्वारा सृजित विस्फोट वातावरण को उन्होंने समीप से देखा ही नहीं हृदय से सराहा भी है। कवि ने स्वयं कहा है ' राष्ट्रीयता मेरे भीतर से नहीं जन्मी उसने बाहर से आकर मुझे अक्रांत किया है।'1 स्वभाव से 'दिनकर' जी बड़े भावुक लेकिन वातावरण ने उनमें राष्ट्र–प्रेम पैदा किया, राष्ट्रीयता उनकी आत्मा का प्रधान स्वर बन गया। राष्ट्रीयता ने उन्हें क्रान्तिकारी बना दिया। यहाँ तक कि उन्हें 'उग्र विचारों का राष्ट्रीय कवि' की स्वीकृति दी जाने लगी। 'तांडव' कविता में कवि का हाहाकार सुनिए–

घहरे प्रलय–प्रमोद गगन में / अंध–घूम हो व्याप्त भुवन में,
बरसे आग बड़े मलया –निल / मचे त्राही जग के ऑगन में,
फटे अनल पाताल, धंसे जग / उछल–उछल कूदे भूधर,
नाचो, हे नाचो नटवर।–(रेणुका)

'रेणुका' का क्रान्ति स्वर वीर भगत सिंह के उपासक युवकों के श्रद्धाभाव का पूरक है। 'हुंकार' में पहुचकर तो कवि का उग्र रूप पागलपन का रूप ले लेता है। 'दिनकर' जी आत्मसंतुलन खोकर नाश और विध्वंस के कट्टर आवाहक स्वर में कहतें हैं–

नहीं जीते जो सकता देख / विश्व में झुका तुम्हारा भाल /
वेदना–मधु का भी कर पान / आज उगलूंगा गरल कराल।–(हुंकार)

'दिनकर' जी के काव्य में राष्ट्र के प्रति गौरव गान के साथ राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक क्रान्ति के जो स्वर गूंजते थे उन्हें असंख्य युवकों के हृदयों को स्फूर्ति से भर दिया था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए देश का क्रान्तिकारी दल जिस प्रकार की कार्रवाई में संलग्न था, कवि उसका समर्थन करता है। 'दिनकर' जी पर क्रान्तिकारियों का इतना प्रभाव बनता गया कि गांधी जी की श्रद्धा भावना भी काम नहीं आई। 'दिनकर' जी के उग्र स्वर पर 1942 के 'जन–विद्रोह' एवं 'आजाद हिंद फौज' के मुक्ति अभियान का भी गहरा रंग है। 'भारत छोड़ो' की घोषणा और जयप्रकाश जी के क्रान्तिकारी ओजस्वी एवं कर्म निष्ठ व्यक्तित्व की जीवित अनुभूति है। जयप्रकाश जी कवि के लिए क्रान्ति की आत्म–अलिदानी– भावना का प्रतीक रहा है। सिर पर कफन बांधकर सर्वस्व होम देने वाले राष्ट्र भक्ति का वाचक रहा है। कवि देश की स्वतन्त्रता के लिए आक्रोश प्रकट करते हुए कहते हैं–

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

रक्त है या नसों में क्षुद्र पानी।
जाँच कर तू सीस दे देकर जवानी।

कवि केवल अतीत के गौरव की स्मृतिमात्र से संतुष्ट नहीं है, वरन उनसे प्ररेणा लेकर भारतमाता की गुलामी की बेड़ियों को काटने की प्रेरणा भी देता है। कवि का आह्वान है–

समय मांगता मूल्य मुक्ति का, देगा कौन मांस की बोटी।
पर्वत पर आदर्श मिलेगा, खाएं चलो घास की रोटी।

परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई भारतभूमि से कवि स्पष्ट शब्दों में पूछता है–

ओ भारत की भूति वंदिनी! जंजीरों वाली!
तेरी ही क्या कुक्षि फाड़कर जन्मी थी वैशाली।

कवि भीख में वह आग मांगता है–जो देश की गुलामी, शोषण और अत्याचार को भस्म कर दे। कवि अपनी कलम से भी उन वीर सपूतों को जय बोलने में गौरव मानती है जो मातृ–भूति के लिए अपना बलिदान देने के लिए तत्पर थे। इसीलिए कवि कहता है–

कलम, आज उनकी जय बोल।
जला अस्थियां बारी –बारी, छिटकाई जिसने चिंगारी,
जो चढ़ गए पुण्य बेदी पर बिना गरदन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

'दिनकर' जी की क्रान्ति की अभिव्यक्ति मात्र राजनीतिक असंतोष के पक्ष में ही नहीं आर्थिक शोशण के संदर्भ में भी हुई है। कवि की संवेदना देखने को बनती है–

स्वानों को मिलता दूध, वस्त्र, भूख से बालक अकुलाते है।
मॉ की हड्डी से चिपक ठिठुर जाड़ों की रात बिताते है।
युवति के लज्जा–वसन बेच जब व्याज चुकाये जाते है।
मलिक जब तेल फुफलों पर पानी सा द्रव्य बहाते है।
पापी महलों का अहंकार देता मुझको तब आमंत्रण।

क्वि का भारत की दुर्दशा पर गहरा असंतोष व्यक्त हुआ है। लेकिन भारतीय नौजवानों के साहस को सशक्त अभिव्यक्ति देते हुए कवि कहता है–

गरजकर बता सबको, मारे किसी के मरेगा नहीं हिन्द देश।
लहू की नदी तैर कर आ गया है, कहीं से कहीं हिन्द देश।
लड़ाई के मैदान में चल रहे हैं, ले के हम उसका निशान।
खड़ा हो जवानी का झण्डा उठा, ओ! मेरे देश के नौजवान।

गांधी जी की विचारधारा से प्रभावित होने के कारण कवि का राष्ट्रवाद और अधिक पुष्ट और मजबूत बन गया है, किन्तु वे अहिंसा में विश्वास न करते हुए हिंसा को मूल में रखते हुए कहते हैं– भांति और अहिंसा के सिद्धान्त को अपनाता है तो इससे उसकी कायरता ही उजागर होती है।

राष्ट्रीयता चेतना से परिपूर्ण अपनी रचनाओं में 'दिनकर' जी ने विशाल द्वेष के प्रति अनुराग का उच्च भाव राष्ट्र वंदना के रूप में मुखरित किया है। जो निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है–

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

मेरे नगपति मेरे विशाल / साकार,दिव्य, गौरव, विराट / पौरूष के पजीभूत ज्वाल
मेरी जननी के हिम–किरीट / मेरे भारत के दिव्य भाल।

'दिनकर' जी के काव्य का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि उनका काव्य राष्ट्रीय चेतनाओं से परिपूर्ण है। उन्होंने अपने युग का प्रतिनिधित्व अपने काव्य में किया है। कवि स्वतन्त्रता के लिए सभी कुछ न्यौछावर कर देने तथा स्वयं को भी बलिदान कर देने की भावना को प्रोत्साहित करते हैं। स्वतन्त्रता–पूर्व की रचनाओं में कविवर 'दिनकर' की राष्ट्रीय काव्य–चेतना केवल देश–प्रेम (भारत) तक सीमित थी किन्तु शायद उसी का विकसित रूप आदर्श की रचनाओं में अंतराष्ट्रीयता और मानवतावाद के रूप में मिलता है।

अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि 'दिनकर' जी राष्ट्रीयता वास्तव में भाववादी राष्ट्रीयता है जिसमें चिंतन की संगति की अपेक्षा आवेग और आक्रोश है। परतन्त्रता के कारण अंग्रेजों के शोशण और अत्याचारों की प्रतिक्रिया का शक्तिशाली रूप 'दिनकर' के काव्य में दृष्टिपात होता है।

संदर्भ सूची

1. डॉ भोखर चन्द्र जैन, 'राश्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य–कला', पुस्तक सदन, जयपुर–1965 पृ0–47
2. दिनकर, 'चक्रवाल' (भूमिका) उदयाचल प्रकाशन, पटना–1939 पृ0–33
3. लक्ष्मीनारायण सुधांसु, 'दिनकर' https://www./ouryog.com/ramdhari-singh-dinkar.
4. दिनकर, 'रेणुका', रामलोचन प्रकाशन, दिल्ली–1935
5. दिनकर, 'हुंकार' उदयाचल प्रकाशन, पटना–1939
6. सवित्री सिन्हा, 'दिनकर', राधाकृश्ण प्रका ान, दिल्ली–1970 पृ0 232